''भारतीय स्त्री मुक्ति के संदर्भ में सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य का मूल्यांकन''

पं.रविषंकर शुक्ल विष्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग. के कला संकाय के अन्तर्गत

हिन्दी विषय में पी–एच.डी. की उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

निर्देषक
डॉ. श्रीमती रीता गुप्ता
विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग)
सहायक प्राध्यापक
शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय, उतई, दुर्ग (छ.ग.)

सहनिर्देषक
डॉ. फिरोजा जाफर अली
सहायक प्राध्यापक
(हिन्दी विभाग)
कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई नगर, दुर्ग(छ.ग.)

शोद्यार्थी
श्रीमती उपमा शुक्ला

प्राचार्य
कल्याण महाविद्यालय भिलाई नगर दुर्ग (छ.ग.)

शोध–केन्द्र

कल्याण स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर, दुर्ग (छ.ग.)

1. **शोध प्रबन्ध का शीर्षक :–**

"भारतीय स्त्री मुक्ति के संदर्भ में सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य का मूल्यांकन"

2. **भूमिका :–**

भारतीय स्त्री का स्वरुप हमेशा से आदरणीय माना गया है। 'रामचरित मानस' के सृजन के मूल में एक नारी ही प्रेरणा स्वरुप थी। उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द ने विकासात्मक स्तर पर नारी को श्रेष्ठता प्रदान करते हुए लिखा है– "मैं प्राणियों के विकास में (नारी को) उसको पुरुषों से श्रेष्ठ समझता हूँ जैसे–प्रेम, त्याग और श्रद्धा, हिंसा, और कलह से श्रेष्ठ है.................. स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है, जितना प्रकाष अँधेरे से।"

स्त्री को धरती के समतुल्य माना गया है। वह संयमी तथा मानवीय गुणों से युक्त मानी गयीं है। विपरीत अवस्था में भी वह संयम का त्याग नहीं करती अतएव वह पुरुषों से श्रेष्ठ मानी गयी हैं। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि वह पुरुषों की प्रेरणा स्त्रोत बनकर सामने आती हैं।

जैनेन्द्र की 'सुनीता' उपन्यास की नायिका सुनीता नारी के स्थान को स्पष्ट करते हुए कहती है –"हमारा यह काम है कि हम पुरुषों को सामने चलावें, जब वह पीठ की ओर भागना चाहें तब हम सामने हो जाती हैं। हमसे पार होकर वह जा नहीं सकेगा।"

आज के परिवेष में यदि देखें तो उन्होंने अधिकार की कामना की है। उन्हें अब गुलामी की जिंदगी पसंद नहीं है। वह अन्याय को समाप्त करने के लिए तत्पर हैं। प्राचीन काल में वैदिक ऋषियों का हृदय पक्षपात की कालिमा से कलंकित नहीं हुआ था, उनके समक्ष नर और नारी दोनों थे। समाज में नारी की स्थिति पुरुष के समान थी। वह तो घर की राजरानी मानी जाती थी।

वैदिक काल में कन्या स्वेछा से अविवाहित जीवन व्यतीत कर सकती थी किन्तु रामायण कान में उनका विवाह अनिवार्य हो गया था। सतीत्व की रक्षा स्त्री का प्रथम धर्म था। सीता को सारे कष्ट सतीत्व की पवित्रता के लिए सहने पड़े थे।

प्राचीन समय से ही स्त्रियों की स्थिति मजबूत रही है। मुस्लिम आक्रमण के पष्चात् स्त्रियों के सामने समस्या आई। बाल विवाह, अनमेल विवाह, नारी अषिक्षा आदि। इन परिस्थितियों से उबरने के लिए अनेक उपाय किए गए चाहे वह आन्दोलन के रुप में हो या मुक्ति के लिए किया गया प्रयास हो।

सुधा अरोड़ा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी व्यक्तित्व को एक नया आयाम प्रदान करने का प्रयास किया है। कहा जाता है कि साहित्यकार समाज का सच्चा पथ–प्रदर्षक होता है, क्योंकि समाज की सारी गतिविधियों को वह अपने साहित्य के माध्यम से भाषा व भाव के समागम से समाज के सामने सम्पूर्ण गतिविधियों का लेखा जोखा रख देता है।

सुधा अरोड़ा की रचनाओं में ये भाव स्वभावतः प्रस्फुटित हुए हैं, उनकी रचनाओं से समाज का पूरा प्रतिबिंब दृष्टिगोचर हो जाता है। सुधा अरोड़ा ने कृतियों के माध्यम से स्त्री मुक्ति का प्रयास किया है। इस प्रकार इनकी रचनाएं, स्त्री मुक्ति की द्योतक हैं जिनमें स्त्री का उभरता रुप दिखता है। इनकी दृष्टि उस ओर जाती है, जहाँ तक लोग सोच भी नहीं पाते हैं। समय की माँग के अनुसार उन्होंने समसामयिक बिंदुओं को तथ्यों के माध्यम से प्रदर्षित करने का प्रयास किया है। अंततः यह स्पष्ट है कि उनकी रचनाएँ प्रेरक तत्व के रुप में हमारे समक्ष प्रस्तुत है।

सुधा अरोड़ा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नारी के व्यक्तित्व को नया आयाम प्रदान करने का सफल प्रयास किया है। उनकी रचनाएं प्रेरक तत्व के रूप में साहित्य जगत में प्रस्तुत हैं। उनकी रचनाओं में निहित विभिन्न पक्षों को परखने के लिए प्रस्तावित शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त कर समझने की चेष्टा करेगें।

अध्याय – 1 भारतीय स्त्री की पराधीनता का ऐतिहासिक संदर्भ मुक्ति की छटपटाहट और संघर्ष

1 प्राचीन काल

2 मध्यकाल

3 आधुनिक काल

अध्याय – 2 भारतीय नवजागरण और स्त्री मुक्ति के प्रयास

क – भारतीय नवजागरण और स्त्री मुक्ति

1 मराठी नवजागरण

2 बंगला नवजागरण

ख – हिन्दी नवजागरण और स्त्री मुक्ति

1 भारतेन्दु युग

2 छायावाद युग और प्रेमचन्द युग

3 प्रेमचन्दोत्तर युग

अध्याय–3 सुधा अरोड़ा व्यक्तित्व और कृतित्व

1 निर्माण–जन्म, परिवार, परिवेष, षिक्षा

2 प्रस्फुटन—सामाजिक, सांस्कृतिक एवं संस्थागत भूमिकाएं

3 व्यक्तित्व विषिष्टताएँ

4 रचनात्मक व्यक्तित्व के विविध आयाम

अध्याय –4 सुधा अरोड़ा का कथा साहित्य : भाषा एवं षिल्प

1 कहानियों का षिल्प

2 औपन्यासिक षिल्प

3 भाषा

अध्याय– 5 भारतीय स्त्री की मुक्ति के संदर्भ में सुधा अरोड़ा का कथा साहित्य

1 स्त्री पराधीनता की पहचान और परख

2 परिवार एवं समाज की रुढ़ियों और परंपराओं के प्रति संघर्ष और विद्रोह

3 स्त्री मुक्ति का स्वरुप

4 स्त्री मुक्ति के मार्ग की बाधाएं

अध्याय–6 स्वातंत्रयोत्तर कथा साहित्य में स्त्री मुक्ति की दृष्टि में सुधा अरोड़ा का योगदान

1 वैचारिक

2 रचनात्मक

3 तुलनात्मक

- उपसंहार
- परिषिष्ट

1 आधार ग्रन्थ सूची

2 संदर्भ ग्रंथ सूची

3 सहायक ग्रंथ सूची

3. पूर्व में किये गए शोध कार्य की संक्षिप्त समीक्षा :–

सुधा अरोड़ा देष की प्रतिष्ठित समसामयिक महिला कथाकार हैं हमारे विष्वविद्यालय में सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य पर किसी भी प्रकार का शोध कार्य संपन्न नही हुआ है। यह प्रस्तावित शोध कार्य (भारतीय स्त्री मुक्ति के संदर्भ में सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य का मूल्यांकन) जो पं. रविषंकर शुक्ल विष्वविद्यालय रायपुर के अंतर्गत संपन्न किया जाएगा, यह शोध कार्य सुधा अरोड़ा पर आधारित प्रथम शोध कार्य होगा, जो साहित्य तथा समाज के लिए उपादेय सिद्ध होगा।

4. प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देष्य :–

प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देष्य यह है कि इस कार्य द्वारा लोगों में स्त्री मुक्ति के प्रति जागरुकता आएगी रुढ़िवादिता, अंधविष्वास, शारीरिक मानसिक प्रताड़ना आदि तत्वों को केन्द्र में रखकर इस शोध कार्य को किया जाएगा। जिससे प्रबुद्ध वर्ग यह सोचने को विवष हो जायेगा कि किस तरह से स्त्री मुक्ति का संदेष जन–जन तक पहुँचाया जा सके। इस शोध कार्य के द्वारा स्त्री को भारतीय संदर्भ में आँकने का प्रयास किया जाएगा।

5. संबंधित क्षेत्र में किए गए महत्वपूर्ण कार्य :–

अनेक महिला कथाकारों की रचनाओं को आधार मानकर शोध कार्य पं. रविषंकर शुक्ल विष्वविद्यालय रायपुर छत्तीसगढ़ के अंतर्गत किए गये हैं, जैसेः "नारी अस्मिता के संदर्भ में नासिरा शर्मा के उपन्यासों का साहित्यिक अनुषीलन" कुमारी एस.अंजना देवी के द्वारा संपन्न किया गया। "सुश्री महादेवी वर्मा के साहित्य में नारी व्यक्तित्व का अनुषीलन" यह शोध कार्य मंदाकिनी तिवारी के द्वारा संपन्न किया गया। "महादेवी वर्मा एवं आषा पूर्णा देवी के गद्य साहित्य में नारी उद्बोधन के स्वर" यह शोध कार्य बिजुरानी चौधरी के द्वारा संपन्न किया गया। ''षिवानी के उपन्यासों में नारी पात्र एक अनुषीलन'' यह शोध कार्य ऋतु श्रीवास्तव के द्वारा संपन्न किया गया।

परन्तु इस विष्वविद्यालय में सुधा अरोड़ा पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ हैं। मैनें सुधा अरोड़ा को पढ़ा तो लगा, कि अन्य महिला कथाकारों पर तो कार्य हुआ है पर सुधा अरोड़ा के ऊपर शोध कार्य जैसा महत्वपूर्ण कार्य संपन्न नहीं हुआ है, मेरा उद्देष्य यही है कि लोगों तक उनके कथा साहित्य को पहुंचाया जाय जिससे लोग यह जानने में सक्षम हों, कि सुधा अरोड़ा देष की जीती जागती सषक्त महिला कथाकार है जिन्होनें समाज में महिलाओं की वस्तु स्थिति को कथा साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

6. शोध कार्य के लिए प्रस्तावित शोध प्रविधिः–

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु आलोचनात्मक, समीक्षात्मक, विवेचनात्मक प्रविधियों का उपयोग किया जाएगा। संबंधित क्षेत्र के लोगों से साक्षात्कार प्रविधि के द्वारा शोध कार्य संपन्न किया जाएगा। निष्चित ही उपर्युक्त प्रविधियाँ शोध कार्य के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण सहयोग देंगी।

7. प्रस्तावित शोध कार्य के आषातीत परिणामः–

प्रस्तावित शोध कार्य का आषातीत परिणाम यह है, कि जो शोध कार्य किया जाएगा इसमें दिग्दर्षन होगा, भारतीय परिवेष में स्त्रियों की स्थिति का जिसमें समाहित है– मानवीय संवेदना, शारीरिक, मानसिक हिंसा, मुक्ति की छटपटाहट, रूढ़ियों, परम्पराओं के बंधन में जकड़ी नारी आदि। भारतीय स्त्री मुक्ति के संदर्भ में जो शोध कार्य किया जाएगा वह लाभकारी होगा, क्योंकि

प्रत्याषित शोध कार्य में स्त्रियों की स्थिति की सम्पूर्ण मनोदषा की अभिव्यक्ति की जाएगी। अन्ततः यह स्पष्ट है कि इस प्रत्याषित शोध कार्य का उद्देष्य इस बात में है कि यह एक उच्च स्तरीय योजना है जिसके माध्यम से समाज को एक नयी दिषा प्रदान की जाएगी।

इस शोध कार्य का उद्देष्य सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में भारतीय स्त्री के प्रतिबिंब को साहित्य जगत के सामने लाना है।

8. आधार ग्रंथ सूची

क्रम संख्या	उपनाम	लेखक का नाम	पुस्तक
1	अरोड़ा	सुधा	श्रेष्ठ कहानियाँ
2	अरोड़ा	सुधा	काँसे का गिलास
3	अरोड़ा	सुधा	यहीं–कहीं था घर
4	अरोड़ा	सुधा	आम औरत जिन्दा सवाल
5	अरोड़ा	सुधा	रहोगी तुम वही
6	अरोड़ा	सुधा	काला शुक्रवार
7	अरोड़ा	सुधा	एक औरत की नोटबुक
8	अरोड़ा	सुधा	औरत की कहानी
9	अरोड़ा	सुधा	दहलीज को लाँघते हुए
10	अरोड़ा	सुधा	पंखो की उड़ान

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

संदर्भ सूची

क्रम संख्या	उपनाम	लेखक का नाम	पुस्तक
1	अरोड़ा	किरण बाला	साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में नारी
2	डागा	सावित्री	आधुनिक हिन्दी मुक्तक काव्य में नारी
3	डहेरिया	खेम सिंह	उपनिवेश से आधुनिकता तक स्त्री कथा
4	दिनकर	रामधारी सिंह	संस्कृति के चार अध्याय
5	दुबे	अभय कुमार	नारीवाद की हिन्दी कथा
6	जैन	अरविन्द	स्त्री मुक्ति का सपना
	मंडलोई	लीलाधर	
7	कुमार	कृष्ण	कहानी के प्रतिमान
8	कुमार	जैनेन्द्र	साहित्य का श्रेय और प्रेय
9	कुमार	जैनेन्द्र	सुनीता
10	के.पी.	प्रमिला	स्त्री अस्मिता और समकालीन कविता
11	ओझा	दशरथ	साहित्य और समाज
12	–	प्रेमचन्द	गोदान
13	–	प्रेमचन्द	कुछ विचार

14	—	—	कबीर ग्रंथावली
15	—	—	महाभारत
16	—	—	रामायण
17	—	—	ऋग्वेद
18	—	—	विमेन इन इंडिया
19			शोध प्रकल्प
20			रिसर्च लिंक
21			राजहंस हिन्दी निंबध
22			हंस पत्रिका

सहायक ग्रंथ

क्र.सं.	शोधकर्ता का नाम	विषय	सत्र
1	कु. एस. अंजना देवी	नासिरा शर्मा के उपन्यासों का साहित्यिक अनुषीलन	2005
2	मुरलीधर यदु	जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों में नारी चरित्र का समाकलन	1991
3	कु. दुर्गा केंगरानी	निर्मल वर्मा के नारी पात्रों का अनुषीलन	1993
4	राधेष्याम पटेल	साठोत्तरी हिन्द उपन्यासों में स्त्री का सामाजिक स्वरूप : एक अध्ययन	2007
5	श्रीमती मंदाकिनी तिवारी	सुश्री महादेवी के साहित्य में नारी व्यक्तित्व का अनुषीलन	1993
6	बिजुरानी चौधरी	महादवी वर्मा एवं आषापूर्ण देवी के गद्य साहित्य में नारी उद्बोधन के स्वर	1990
7	कु. कुसुम ठाकुर	हिन्दी कहानी के आठवें दषक में पात्रों का अनुषीलन	1994
8	कु. ज्योति बाला श्रीवास्तव	हिन्दी आंचलिक उपन्यासों में नारी पात्र	1991
9	ऋतु श्रीवास्तव	शिवानी के उपन्यासों में नारी पात्रों का अनुषीलन	2005
10	राजेन्द्र पाटकर	हिन्दी नयी कहानी के नारी पात्रों का समाजषास्त्रीय अनुषीलन	1992

9. प्रत्याषी के प्रकाषित शोध पत्रों का विवरण :–

01. ''सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में स्त्री मुक्ति का स्वरूप'' नामक शीर्षक से शोध पत्रिका शोध प्रकल्प में प्रकाषनाधीन है।

02. ''सुधा अरोड़ा के कथा साहित्य में स्त्री पराधीनता की पहचान और परख'' नामक शीर्षक से शोध पत्र रिसर्च लिंक के अंतर्गत प्रकाषनाधीन है।

निर्देषक	सहनिर्देषक	शोद्यार्थी
डॉ. श्रीमती रीता गुप्ता विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग) सहायक प्राध्यापक शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय, अतई, दुर्ग (छ.ग.)	डॉ. फिरोजा जाफर अली सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग) कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई नगर, दुर्ग(छ.ग.)	श्रीमती उपमा शुक्ला

प्राचार्य

कल्याण महाविद्यालय भिलाई नगर दुर्ग (छ.ग.)